

---

# Shri Gayatri Stotram 1

---

## श्रीगायत्रीस्तोत्रम् १

---

### Document Information

---

Text title : Gayatri Stotram 1

File name : gaayatriistotra.itx

Category : devii, gAyatrI, stotra, devI

Location : doc\_devii

Author : Traditional

Transliterated by : WebD

Proofread by : Satish Bharadwaj, Samskrit Samvadah

Description-comments : vasiShThasa.nhita

Latest update : October 16, 2023

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

October 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

---

Shri Gayatri Stotram 1

श्रीगायत्रीस्तोत्रम् १



नमस्ते देवि गायत्रि सावित्रि त्रिपदेऽक्षरे ।  
अजरे अमरे मातस्त्राहि मां भवसागरात् ॥ १ ॥

नमस्ते सूर्यसङ्काशे सूर्यसावित्रि कोमले ।  
ब्रह्मविद्ये महाविद्ये वेदमातर्नमोस्तु ते ॥ २ ॥

अनन्तकोटिब्रह्माण्डव्यापिनि ब्रह्मचारिणि ।  
नित्यानन्दे महामाये परेशानि नमोस्तु ते ॥ ३ ॥

त्वं ब्रह्मा त्वं हरिः साक्षाद्द्रस्त्वमिन्द्रदेवता ।  
मित्रस्त्वं वरुणस्त्वं च त्वमग्निरश्विनौ भगः ॥ ४ ॥

पूषार्यमा मरुत्वांश्च ऋषयोऽपि मुनीश्वराः ।  
पितरो नागयक्षाश्च गन्धर्वाप्सरसां गणाः ॥ ५ ॥

रक्षोभूतपिशाचाश्च त्वमेव परमेश्वरि ।  
ऋग्यजुस्सामवेदाश्च अथर्वाङ्गिरसानि च ॥ ६ ॥

त्वमेव पञ्चभूतानि तत्त्वानि जगदीश्वरि ।  
ब्राह्मी सरस्वती सन्ध्या तुरीया त्वं महेश्वरि ॥ ७ ॥

त्वमेव सर्वशास्त्राणि त्वमेव सर्वसंहिताः ।  
पुराणानि च मन्त्राणि महागम मतानि च ॥ ८ ॥

तत्सद्ब्रह्मस्वरूपा त्वं कञ्चित्सदसदात्मिका ।  
परात्परेशि गायत्रि नमस्ते मातरम्बिके ॥ ९ ॥


चन्द्रे कलात्मिके नित्ये कालरात्रि स्वधे स्वरे ।  
स्वाहाकारेऽग्निवक्त्रे त्वां नमामि जगदीश्वरि ॥ १० ॥

नमो नमस्ते गायत्रि सावित्रि त्वां नमाम्यहम् ।  
सरस्वति नमस्तुभ्यं तुरीये ब्रह्मरूपिणि ॥ ११ ॥


अपराधसहस्राणि त्वसत्कर्मशतानि च ।  
मत्तो जातानि देवेशि त्वं क्षमस्व दिने दिने ॥ १२ ॥  
॥ इति वसिष्ठसंहितायां गायत्रीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

Proofread by Satish Bharadwaj, Samskrit Samvadah

---

——  
*Shri Gayatri Stotram 1*

pdf was typeset on October 16, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

